

पशुओं में शारीरिक स्थिति स्कोरिंग

ममता, रजनीश सिरौही, दीप नारायण सिंह, अजय कुमार एवं यजुवेंद्र सिंह

पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, दुवासू, मथुरा

गायों में शरीर की ऊर्जा भण्डार का आकलन करने के लिए बीसीएस प्रणाली का उपयोग किया जाता है। शारीरिक स्थिति स्कोरिंग या बॉडी कंडीशन स्कोरिंग एक संख्यात्मक पैमाना है जिसका उपयोग शरीर पर वसा की मात्रा का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। गाय कितनी पतली या मोटी है, इसका आकलन मुख्यतः १-५ के पैमाने पर किया जाता है। जहाँ स्कोर १ बेहद पतली स्थिति को दिखाता है वहीं स्कोर ५ अत्यधिक मोटी स्थिति को दर्शाता है। ऊर्जा का एक मुख्य स्रोत है चयापचय के लिए उपलब्ध वसा, शरीर के कुछ हिस्सों में (कन्धों, हुक और पिन हड्डियां, पूंछ के इर्द गिर्द, पीठ की हड्डी आदि) परिलक्षित होने वाला वसा भण्डार स्कोरिंग का एक आधार होता है।

बॉडी स्कोर -१

इसमें पशु बेहद पतला होता है। सभी कंकाल संरचनाएं स्पष्ट दिखाई देती हैं। पूंछ के इर्द गिर्द वसा प्रतीत नहीं होती। ऐसे पशु रोगग्रस्त हो सकते हैं और किसी भी प्रकार का तनाव उनके जीवन के लिए कठोर हो सकता है।

बॉडी स्कोर -२

इस स्कोर में पशु पतला होता है। पूंछ के इर्द गिर्द कूल्हे की हड्डियों और फ्लेंक के आस पास ऊतक कवर कुछ स्पष्ट तो होता है किन्तु प्रचुर नहीं होता है।

बॉडी स्कोर - 3

इस स्कोर में पशु के थोरैक्स की हड्डियां हलकी दिखाई पड़ती हैं। हुक और पिन हड्डियां भी हल्की दिखाई पड़ती हैं। इसमें पूंछ के इर्द गिर्द वसा प्रतीत होती है। ब्याने के समय के लिए यह स्कोर आदर्श माना जाता है।

बॉडी स्कोर -४

इस स्कोर में कंकाल की संरचना की पहचान करना कठिन होता है। इसमें कंधे और पूंछ के इर्द गिर्द वसा स्पष्ट रूप से प्रतीत होती है। पसलियों और जाँघों के ऊपर चर्बी की सलवटें बनने लगती हैं।

बॉडी स्कोर -५

इस स्कोर में पशु काफी मोटा दिखाई देता है। पूंछ के सिरे और कूल्हे की हड्डियां पूरी तरह से वसा की तहों में दबी हुई प्रतीत होती हैं। पीठ सपाट और पूरी तरह से वसा से ढकी हुई प्रतीत होती हैं।

पशुओं की शारीरिक स्थिति सीधे तौर पर उनकी उत्पादकता, स्वास्थ्य और कुल आयु को प्रभावित करती है। शारीरिक भार के अतिरिक्त पशुओं का पतलापन या मोटापन उनमें अन्तर्निहित पोषण सम्बन्धी कमियों, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं और अनुपयुक्त प्रबंधन का संकेतक होता है। यदि नियमित रूप से किया जाए तो शारीरिक स्कोरिंग इन समस्याओं का निवारण करने और उत्पादकता में सुधार करने का माध्यम हो सकती है।

मोटापा चयापचय सम्बन्धी समस्याओं का कारण हो सकता है, ऐसा पशु संक्रमणों के प्रति अधिक संवेदनशील होता है साथ ही उसे ब्याने जे समय और बाद में कठिनाई होने के सम्भावना भी अधिक होती है। इस प्रकार ओवरकंडीशनिंग या मोटापा अनुचित पोषण या प्रजनन प्रबंधन का संकेतक होता है। ओवरकंडीशनिंग आमतौर पर पशु के दुग्धकाल के आखिरी तीन से चार महीनों में शुरू होती है जब दुग्ध उत्पादन में तो कमी आती है किन्तु पशु की आहार व्यवस्था में कुल पोषक तत्वों का स्तर तदनुसार कम नहीं किया जाता। लम्बी शुष्क अवधि प्रदान करना भी ओवरकंडीशनिंग का कारण हो सकता है।

अपर्याप्त ऊर्जा और उत्पादन को बनाए रखने के लिए प्रोटीन के भंडार के कारण अंडरकंडीशनिंग, या पतलापन, अक्सर उत्पादन और दूध वसा के स्तर को कम कर सकता है। पतली गायें अक्सर तब तक गर्मी या गर्भ धारण नहीं करती हैं जब तक कि वे उचित स्कोर में नहीं आ जाती। इन जानवरों को खिलाने में, शरीर के भंडार में वृद्धि करते हुए उत्पादन बनाए रखने के लिए देखभाल की जानी चाहिए।

औसर बछियों के आहार प्रबंधन में यह काफी महत्वपूर्ण होता है। यदि वे युवावस्था में अधिक स्कोरिंग की हो तो उन्हें ब्याने सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। पशु की प्रजनन क्षमता में ऊर्जा संतुलन बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि पशु का ब्रीडिंग के समय काम स्कोर है तो निश्चित ही यह उसकी गर्भावस्था की दर को काम करेगा।

ब्याने से कुछ दिन पूर्व और बाद तक का समय ट्रांजीशन पीरियड कहा जाता है। इस दौरान गाय अक्सर नकारात्मक ऊर्जा की स्थिति में रहती है। ब्याने से पूर्व ओवरकंडीशनिंग वाली गायों में ब्याने के बाद चारे का काम सेवन करने की समस्या हो सकती है। इससे शारीरिक स्थिति का नुकसान होता ही है और नकारात्मक ऊर्जा का अंतर और अधिक गहरा हो सकता है। ड्राई मैटर के सेवन की कमी के कारण दूध उत्पादन पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है और यह केटोसिस या विस्थापित अबोमसम जैसी पोषण सम्बन्धी समस्या के रूप में परिणत हो सकता है।

किसी पशु के स्वास्थ्य की स्थिति का आकलन करने में शारीरिक स्कोरिंग बहुत महत्वपूर्ण है। काम स्कोर जहाँ संभावित बीमारियों या अनुचित पोषण का संकेत दे सकता है वहीं एक उच्च स्कोर प्रजनन और चयापचय सम्बन्धी समस्याओं की अधिक सम्भावना का संकेतक हो सकता है।